सहज-स्फुरण और विनोदप्रियता

आनन्दमय जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्रस्तुत

श्रीगुरुमाई के साथ घटित कुछ प्रसंग

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : १

वाणी अग्रवाल

वर्ष था १९९०। महीना था जनवरी का। मनोरम गुरुदेव सिद्धपीठ में दोपहर होने ही वाली थी और मन्द-मन्द हवा चल रही थी। गुरुचौक में, जहाँ श्रीगुरुमाई दर्शन दे रही थीं, पूर्ण स्थिरता छाई हुई थी।

मैं दर्शन-सहायक की सेवा कर रही थी। दर्शन का समय समाप्त होने ही वाला था कि एक सेवाकर्ता ने आकर मुझे बताया कि भारत सरकार के एक वरिष्ठ मन्त्री आश्रम आ रहे हैं। वे पाँच मिनट में पधारेंगे तथा वे श्रीगुरुमाई के दर्शन करना चाहते हैं।

मैंने गुरुमाई जी को इसके बारे में बताया। गुरुमाई जी ने सिर हिलाया और मुझे उन आदरणीय मन्त्री जी के लिए एक हार लाने को कहा। मैं हार लाने के लिए गई, पर मुझे कोई हार नहीं मिला। मैंने गुरुचौक लौटकर गुरुमाई जी को बताया कि हार उपलब्ध नहीं हैं।

तुरन्त ही, गुरुमाई जी ने दर्शन-बास्केट में रखे मोगरे के गजरों की ओर संकेत किया। कुछ ही मिनट पहले एक भक्त ने ये गजरे अर्पित किए थे। गुरुमाई जी ने मुझे उनमें से कुछ गजरे एक-साथ बाँधकर एक माला बनाने को कहा।

मैं गुरुमाई जी के आसन के पास बैठकर, बड़ी एकाग्रता से उन गजरों को एक-साथ बाँधने लगी। मैं ध्यान से गजरे बाँध ही रही थी कि तभी मैंने ऊपर देखा और पाया कि मन्त्री जी तो गुरुमाई जी के दर्शन के लिए आ गए हैं! उन्होंने घुटनों के बल बैठकर बड़े आदर के साथ श्रीगुरुमाई को प्रणाम किया, और जब वे प्रणाम करके उठ रहे थे तब गुरुमाई जी ने मेरी ओर देखकर कहा, “माला”। उन्होंने संकेत किया कि मैं वह माला मन्त्री जी को पहनाऊँ।

मेरा गजरों को बाँधना अभी पूरा नहीं हुआ था। फिर भी, मैंने उठकर वह माला उनके गले में पहना दी। जैसे ही मैंने वह पहनाई, वह सामने से खुल गई। अब मन्त्री जी के गले में दोनों ओर से फूलों की दो लड़ियाँ लटक रही थीं जो गले के पीछे से तो बँधी हुई थीं पर आगे से खुली थीं।

गुरुमाई जी ने मुस्कराकर मन्त्री जी से तुरन्त कहा, "हवाई में लोगों का इसी प्रकार अभिवादन किया जाता है।"

यह सुनकर मन्त्री जी ख़ुश हुए और उन्होंने कहा कि इस तरह हवाई की पारम्परिक रीति से स्वागत किया जाना उनके लिए गौरव की बात है!

इस अद्भुत वार्तालाप को देखकर मैं विस्मय से भर गई—गुरुमाई जी ने एक पेचीदा परिस्थिति को अत्यन्त प्रफुल्लताभरी परिस्थिति में बदल दिया था।

बाद में, मैं गुरुमाई जी द्वारा हवाई की पारम्परिक मालाओं का उल्लेख करने के बारे में सोचती रही, क्योंकि जिन हवाई मालाओं—जिन्हें 'लेय्' कहा जाता है—के बारे में मैं जानती थी, वे तो भारतीय मालाओं की ही तरह गोल, बँधी हुई मालाएँ होती हैं। फिर एक दिन, मैंने एक बहुत विशेष प्रकार की 'लेय्' की तस्वीर देखी जिसे 'माइली लेय्' कहा जाता है। मुझे पता चला कि इनका उपयोग ख़ास अवसरों पर, माननीय अतिथियों का सत्कार करने के लिए किया जाता है। यह विशेष 'लेय्' सामने से खुली होती है, बिलकुल उसी तरह जैसे मैंने मोगरे के गजरे एक-साथ बाँधकर मन्त्री जी को पहनाए थे! बाद में, मैं पूरा प्रसंग याद करके फिर से विस्मयाभिभूत रह गई :
श्रीगुरुमाई अचूक रूप से जानती थीं कि उनके दर्शन के लिए आए मन्त्री जी का स्वागत कैसे किया जाना चाहिए।

***

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : २

स्वामी अखण्डानन्द

फ़रवरी, २००४ में एक दिन, मैं और कुछ अन्य सेवाकर्ता अनुग्रह भवन की निचली लॉबी में श्रीगुरुमाई के साथ कुछ चर्चा कर रहे थे। मैंने गुरुमाई जी को, सुनने के कौशल को सुधारने के लिए अपना एक विचार बताया जिससे कि, वे जो कहती हैं उसे लोग बिलकुल ठीक से याद रख पाएँ और उसे पूरी तरह समझ पाएँ।

गुरुमाई जी मुस्कराईं और उन्होंने कहा कि उन्होंने देखा है कि जब मैं सुनता हूँ—ख़ासकर उन्हें सुनता हूँ—तो मैं तुरन्त ही अपना सिर हिलाकर कहता हूँ, "ओह, हाँ!" तब ऐसा लगता है कि मुझे सब कुछ कितनी जल्दी समझ में आ रहा है, जबकि हो सकता है कि यह सच नहीं है! श्रीगुरुमाई ने समझाया कि वे यह देखना पसन्द करती हैं कि लोग उनकी सिखावनियों को कैसे समझते हैं; इस कारण, वे और भी धीमी गति से बोलेंगी, फिर थोड़ा रुकेंगी ताकि उन्होंने जो कहा है, लोग उस पर विचार कर सकें, और फिर वे उनसे कहेंगी कि उन्होंने जो समझा है, वे उसे जाँच लें, दोबारा जाँच लें।

गुरुमाई जी ने वहाँ उपस्थित एक सेवाकर्ता को इस बारे में आगे समझाने को कहा। उस सेवाकर्ता ने बताया कि गुरुमाई जी उसके साथ मेरी इस वृत्ति के बारे में बात कर रही थीं, और जो चित्र उन दोनों के मन में उभरकर आया वह था, सिर के ऊपर से जेट-विमान का उड़ना।

गुरुमाई जी ने उस सेवाकर्ता को अभिनय करके दिखाने को कहा कि मैं गुरुमाई जी की बात को कैसे सुनता हूँ। सेवाकर्ता ने नाट्यरूप में चित्रित किया—उसने ऊपर देखा मानो वह आकाश में विमान देख रही हो और कहा, "स्वामी जी कहते हैं, ज़ूऽऽऽप—*वाह! क्या आइडिया है!* ज़ूऽऽऽप—*बढ़िया प्लॅन है!* ज़ूऽऽऽप—*क्या ख़ूब विचार है!* हर *ज़ूऽऽऽप* स्वामी जी की तुरन्त होने वाली प्रतिक्रिया होती है जिसे वे हर नए विचार या प्लॅन को सुनकर व्यक्त करते हैं . . . लेकिन फिर भी . . . वे कभी रुकते ही नहीं ताकि वे प्लॅन या विचार उनके अन्दर उतर पाएँ।"

गुरुमाई जी की बात सुनने के मेरे तरीक़े की बिलकुल सही नक़ल जब इस सेवाकर्ता ने प्रस्तुत की, तो सभी हँस पड़े—और मैं भी हँसा। मुझे अपनी आदत समझ में आ गई, और मैं कृतज्ञ था कि श्रीगुरुमाई ने मुझे अपनी इस आदत के प्रति सचेत किया।

इसके कुछ सप्ताह बाद मैं गुरुमाई जी से मुक्तानन्द मन्दिर में फिर से मिला। गुरुमाई जी ने कहा, "स्वामी जी, मेरे पास आपके लिए एक उपहार है," उनकी आँखों में एक चमक थी। उन्होंने कहा कि यह उपहार मुझे याद दिलाएगा कि मुझे सुनना है और विचारों को अन्दर उतरने देना है, उन्हें समझना है।

फिर गुरुमाई जी ने वहाँ उपस्थित एक सेवाकर्ता को आगे आने के लिए कहा। उस सेवाकर्ता के हाथ में एक चमकीला, सफ़ेद-नीले रंग का, ७४७ जेट-विमान का एक खिलौना था! हम सभी हँस पड़े, और मैंने बड़ी ख़ुशी से श्रीगुरुमाई का यह प्रसाद स्वीकार किया।

तब से मैंने वह जेट-विमान का खिलौना अपनी पूजा में रखा है। मुझे जिसका अभ्यास करना है, उसे दर्शाने वाला यह जेट-विमान एक अत्यन्त प्रभावकारी प्रतीक है। यह मुझे याद दिलाता है कि जब श्रीगुरुमाई कुछ कह रही हों तो मैं वर्तमान में उपस्थित रहूँ और सचेत रहकर सुनूँ, तथा जो कहा जा

रहा है उस पर मनन करूँ और यह पता लगाऊँ कि गुरुमाई जी की सिखावनियों से मुझे क्या समझ मिल रही है। जब भी मैं अपने श्रीगुरु से प्राप्त इस प्रसाद को, इस विमान को देखता हूँ तब हर बार अपने अन्दर कृतज्ञता उमड़ते हुए अनुभव करता हूँ।

© २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।